TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182180

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No

Accession No

Author

Title

This book should be returned on or before the date last marked below

नया रोजगार

श्री गोपालप्रसाद व्यास
चित्रकार
श्री शिक्षार्थी

इंदौर
न व यु ग सा हि त्य स द न
१९४६

प्रकाशक—
गोकुलदास भूत
नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर

प्रथम बार १९४६
मूल्य
तीन रुपये

मुद्रक—
अमरचन्द्र,
राजहंस प्रेस, देहली

अपनी ही

पत्नीको

सादर, सप्रेम और सभय

व्यास

बाबू गुलाबरायजी, जिनकी मैस ने एक दिन साक्षात् उपस्थित होकर मुझे इस रस मे ला पटका, श्रद्धेय सत्येन्द्रजी, जिन्होने कहा, "नहीं, यह रस बुरा नही है, हिन्दी मे इसकी जरूरत है और 'हिन्दुस्तान परिवार', जिसके द्वारा प्रोत्साहन, पुरस्कार और प्रचार पाकर मैं कवि बन बैठा— ये सब ही मेरी रचनाओं के कारण है। आज इन सब की ही आशा छन्द रूप मे पाठकों के सम्मुख आरही है। इन रचनाओं के दोष मेरे हैं और गुण उन सहृदय-बन्धुओं के, जो समय-समय मुझे सुझाते और समझाते रहे हैं।

गोपालप्रसाद व्यास

हिन्दुस्तान
नई दिल्ली,
३१ दिसबर '४५

इसमें ये मिलेंगे...

		पृष्ठ
१.	नया राजगार	१
२.	नया धर्म निर्माण करो	८
३.	मै अवसरवादी नेता हूँ	११
४.	यह झगडा मुझे पसन्द नही	१५
५.	तुलसी मेरा उपकार करो	१८
६.	जन्माष्टमी प्रसग	२१
७.	स्नान-धर्म	२४
८.	कहना-सुनना बेकार गया	२७
९.	ताजा अखबार	३०
१०.	दिल्ली का तुहफा	३३
११.	पत्नी को परमेश्वर मानो	३७
१२.	सब गाधीजी की माया है	४१
१३.	मै महावीरजी जाऊगी	४४
१४	दिवाली के दिन	४९
१५.	एजी कहूँ कि ओजी कहूँ	५२
१६.	पत्र का उत्तर	५५
१७.	व्यास हायावली	६१
१८.	आदत से मजबूर	६६
१९.	चला जा	६७
२०.	मुझे जुकाम हुआ है	६९
२१.	इतना ही क्या मुझको कम है !	७१
२२	हिटलर मरा गया होगई हार	७३
२३.	तू राम भजन कर प्रानी...	७९

नया

अब से पहले सम्पादक था
एक नये, सुन्दर मासिक का।
हिन्दी के बाजार-भाव पर
जिसका जमा हुआ था सिक्का।

रोज़-

बड़े ठाठ थे, बड़े रौब थे,
नाम-गाम ऊँचे थे भाई।
मगर व्यर्थ होगए, जब कि
संचालकजी से हुई लड़ाई।

गार

हमने कहा कि संचालकजी,
ले लें अपनी लाल पैंसिल,
ले ले अपनी छोटी कैंची,
ले लें सम्पादक की डिगरी,

अपने पहले भूत लगाने से ही
काम निकल जाएगा।
है कुछ दिन की बात
दूसरा काम शीघ्र ही मिल जाएगा।

लेखक हूँ मैं लिख-लिखकर ही
अपना काम चला सकता हूँ।
खुद अपने को छोड़ और
दो को भी बैठ खिला सकता हूँ।

लिक्खूंगा मैं लेख फड़कते
सैक्स-तत्व, सौन्दर्य-शास्त्र पर,
नारिवर्ग की आजादी पर,
उनके शिक्षा-सस्कार पर।

राजनीति के हर पहलू पर
अपना बल दिखला दूंगा मैं।
हिन्दी भाषा, सम्मेलन मे
नई रोशनी ला दूगा मैं।

कैसे होता है प्रचार
अखबारो के हल्ले की हरकत,
क्या रग लाती है, टीकमगढ़
को भी सबक सिखा दूंगा मैं।

हर महिने मैं लिखा करूंगा
एक नई पुस्तक अलबेली।
विषय चटपटा, गैटअप सुन्दर,
अपने ढग की एक अकेली।

मित्र लिखेगे समालोचना,
ठेलो मे वह बिका करेगी।
मेलो मे विज्ञापन होगा,
खूब बिकेगी, खूब छपेगी।

हाय लड़ाई ! स्वप्न भग होगया
नही कागज मिल पाता।
लिखी पुस्तकें रखी, इन्हे
रद्दी के भाव न पूछा जाता।

अखबारो से लौट-लौटकर
लेख-कहानी वापस आते।
बडी शिष्टता और सभ्यता से
यूं सम्पादक फरमाते—

"प्रियवर, कागज की तेजी मे
पुरस्कार होगया असम्भव।
आगे और न कष्ट करें,
हम स्वय मँगा लेगे होगा जब।"

हमने कहा कि सम्पादकजी,
चार्टें अखबारों के पन्ने।
ले लें पुरस्कार खुद ही सब
ऊँची कुर्सी पर डट करके।

(अरे) कवि हूँ कविता पढ़-पढ़कर ही
अपना रंग जमा सकता हूँ।
कालिज के लड़की-लड़को को
चुटकी में बहका सकता हूँ।

आखिर गला सुरीला मेरा
और काम आएगा किस दिन?
लम्बे बाल, लचकती काया का
क्या और बनेगा भगवन्!

हूँ यथार्थ मे छायावादी,
लिखता हूँ 'रोमान्स' गीत मैं।
प्रेम तत्व है, नारि पहेली,
श्रद्धा रखता हूँ अतीत मे।

पर मैं युग के साथ चलूंगा
इन्कलाब का हाथ पकड़कर।
'प्रगतिशील पथिको' की टोली में
आऊंगा आगे बढ़कर।

'रूस जयी हो'—कम्यूनिस्ट हूँ,
चीन-मित्र—फासिस्ट विरोधी।
मजदूरो का नेता हूँ मैं
विप्लववादी कवि हूँ क्रोधी।

उधर रईसो की महफिल में
अचकन सजकर जाऊंगा मैं।
सानुप्रास मधुर वाणी मे
झुक आदाब बजाऊंगा मैं।

खन्नाजी का व्याह या कि
लालाजी के लड़के का मुण्डन,
जहाँ कही कवि-सम्मेलन हो
सुनकर दौड़ा जाऊंगा मैं।

भारतवर्ष बहुत विस्तृत है
मैं अपने ढग का पहला कवि;
थोड़े दिन के भीतर ही बस
खूब नाम पा जाऊंगा मैं।

आएंगे फिर मुझे निमन्त्रण,
दूर-दूर कवि-सम्मेलन से,
ले 'सैकिन' का खर्च, थर्ड से
ही बस टिकट कटाऊंगा मैं।

हाय लड़ाई ! रेल बन्द होगई
टिकट कब मिल पाती है ?
हुए निमन्त्रण व्यर्थ कि कविता
लिखी-लिखी ही रह जाती है।

मैं निराश होगया, किन्तु
फौरन ही सूझ उठी अन्तर से।
बाँध बिस्तरा बिना कहे ही
निकल पड़ा मैं अपने घर से।

मेरे घर पर मत कह देना,
मैं दिल्ली से बोल रहा हूँ।
पढ़ना - लिखना छोड़
हजामत की दुकान मैं खोल रहा हूँ।

कवि, लेखक और पत्रकार
इन तीनों को ही नमस्कार कर,
सिल्ली पर मैं रगड़ उस्तरा
उसकी धार टटोल रहा हूँ।

दो आने दाढ़ी के लेकर
छै आने मे बाल छाँटता।
बड़े-बड़े अफलातूनो की
मूछो के मैं बाल काटता।

मैं स्वतंत्र हूँ, संचालक की
धमकी मुझको नही डराती।
मैं प्रसन्न हूँ, लेख लौटने की
अब नही मुसीबत आती।

मेरे ग्राहक सुनते है मेरी
कविता को बड़े चाव से।
'कला कला के लिए' छन्द
लिखता हूँ मैं स्वच्छन्द भाव से।

— ———

अब नया धर्म निर्माण करो

अब नया धर्म निर्माण करो !

दरवाजे से ही कुशल पूछ, वापस अपना महमान करो !

मित्रों से बात करो घुल-घुल,
बेशक उनको घर आने दो।
यदि भेंट कभी ले आते हैं,
अच्छा है, उनको लाने दो।
पर इस कन्ट्रोल-काल मे ऐसी
गलती कभी न कर देना,
जो कह बैठो उनसे झट यों–
आओ, प्रियवर, जलपान करो।
अब नया धर्म० !

झूंठी कथा—खिलाना पड़ता,
मिथ्या यज्ञ—कहाँ है आहुति?
श्राद्ध-कर्म मे जलाञ्जली ही
श्रेष्ठ बताती आई है श्रुति!
तीर्थ-पर्यटन करने को अब
रेलें कहो कहाँ मिलती हैं?
अरे, "शेल्टर" की समाधि मे
स्वयं मिलेगी पड़ी धर्म-द्युति!

नल पर यदि कन्ट्रोल न हो तो
तुम संध्या बेशक कर डालो।
भूखे रहकर करो प्रार्थना
अपना अगला जनम बनालो।
ब्राह्मण-भोजन पुण्य-कार्य मे
आज सहायक हो न सकेगा,
स्वर्ग-प्राप्ति के लिए व्रतों का
ही सर्वत्र विधान करो।
अब नया धर्म०

मरने वालो से कहदो तुम—
मरो नहीं, कन्ट्रोल लगा है।
रुके रहो बच्चो प्रसूति मे
अभी नहीं कन्ट्रोल हटा है।
बच्चों के शादी-विवाह मुल्तवी
करो तुम युद्ध काल तक,
जो जल्दी करते हो उनसे
कहदो—रे, कन्ट्रोल लगा है।

हुक्म नही जो यह मानेगा
वह डिफैंस मे आजाएगा।
मरने-जीने से पहले ही
ठीक सजा वह पाजाएगा।
प्रेमी-प्रेमिक ! किसी ज्योतिषी से
ही अपनी उम्र पूछकर,
खैर मनाकर ही अपना वह
प्रेम-बाण सन्धान करो।
अब नया धर्म०

इस भारत के पुरुष पुरातन
कन्द-मूल खाकर रहते थे।
अपरिग्रही अमित सन्तोषी
जो पडती थी सब सहते थे।
तुम उनकी सन्तान ! पेट मे
कोठी है, या गुफा विधाता !
दस छटाक, हाँ दस छटाक से
भी सन्तोष नही हो पाता !

छः छटाक कम एक सेर को
कौन बताता है कम खाना ?
बन्दर की सन्तान मनुज ने
गेहूँ खाना कब से जाना ?
अधिकारों के लिए झगड़ना
हिन्दू कब से सीख गये है ?
ज्वार, बाजरा, मक्का खाकर ही
पैदा सन्तान करो।
अब नया धर्म०

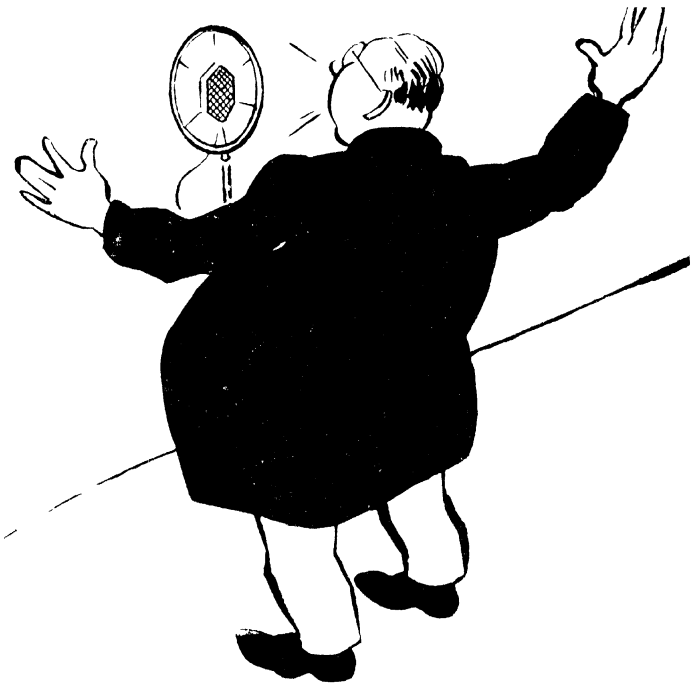

मैं अवसर-वादी नेता हूँ

मैं प्रभु से यही मनाता हूँ,
विधना से यही चाहता हूँ,
मैं सारी रात जागता हूँ,
मैं दिन-भर यही सोचता हूँ—

सरकार सुपथ पर अड़ी रहे,
कांग्रेस जेल मे पड़ी रहे,
जिन्ना को लेकर 'लीग' सदा ही
दूर अकेली खड़ी रहे।

बस यही वक्त है जनता मे
अपना विश्वास जमाने का।
बस यही वक्त है गई लीडरी को
फिर वापस पाने का।
बस यही वक्त है बार-बार
रह-रहकर दिल्ली जाने का।
बस यही वक्त है जीहजूर कह
कौसिल मे घुस जाने का।
मैं यही सोच, अनुकूल वायु पा,
अपनी नौका खेता हूँ।
मैं अवसरवादी नेता हूँ!

जिस समय काग्रेस रंग पर थी,
मैं खद्दर शुद्ध पहनता था।
उसकी जिस समय बजारत थी,
मैं भाषण देता फिरता था।
मैं भी 'हरिजन' का ग्राहक था,
बस अनुशासन पर चलता था।
मेरे घर मे यरवदा-चक्र पर
बढ़िया सूत निकलता था।
जब हुआ व्यक्तिगत आन्दोलन,
मैंने खुद को बीमार किया।
मित्रो से आँख बचा करके
घर मे छुपना स्वीकार किया।
यह एक समय की नही बात
इक्किस, इकतिस, इकतालिस मे,
जब-जब जैसा मौका आया
वैसा ही रुख अख्यत्यार किया।
खतरे के समय कांग्रेस को
मैं नमस्कार कर देता हूँ।
मैं अवसरवादी नेता हूँ!

मैं 'महासभा' की गति-विधि को भी
देख रहा हूँ ठीक तरह।
मैं 'निर्दल-दल' के सम्मेलन मे
भी जाता हूँ जगह-जगह।
मै ढूँढ रहा हूँ गुण-अवगुण
सब पाकिस्तान-योजना के,
देखो टेबिल पर पड़ी हुई है
'अखण्डभारत' पुस्तक यह।
मै देख रहा हूँ युद्ध अभी
कितना लम्बा जासकता है।
मैं सोच रहा हूँ समय अभी
कितना पलटा खासकता है।
मैं समझ रहा हूँ कौन कहाँ पर
त्याग-पत्र दे डालेगा,
फिर किस तिकड़म से उस पद पर
मेरा नम्बर आ सकता है।
मैं इसीलिए ही बड़े लाट से
कभी-कभी मिल लेता हूँ।
मै अवसरवादी नेता हूँ!

चाहे कोई आगे आये
हो लीग, सभा या निर्दल-दल।
तुम मुझको आगे पाओगे
पहली कतार मे खडा अटल।
मैं तुम्हे बताए देता हूँ
सत्ता मेरे कर मे होगी,
मैं अमित पराक्रम, क्षिप्रबुद्धि,
मुझमे साहस मुझमे है छल।
तुम कहते हो काग्रेस कभी
जेल से छूटकर आजाए।

सरकार उसे शासन सौंपे,
सारा गुड-गोबर होजाए।
मैं फर भी नही रुकूंगा,
मैंने राह सोचली है सीधी,
देखूं ऐसा है कौन मुझे,
जो वाम पक्ष का बतलाए।
चाहे पहनू मिल के कपड़े,
टोपी खद्दर की देता हूँ।
मैं अवसरवादी नेता हूँ!

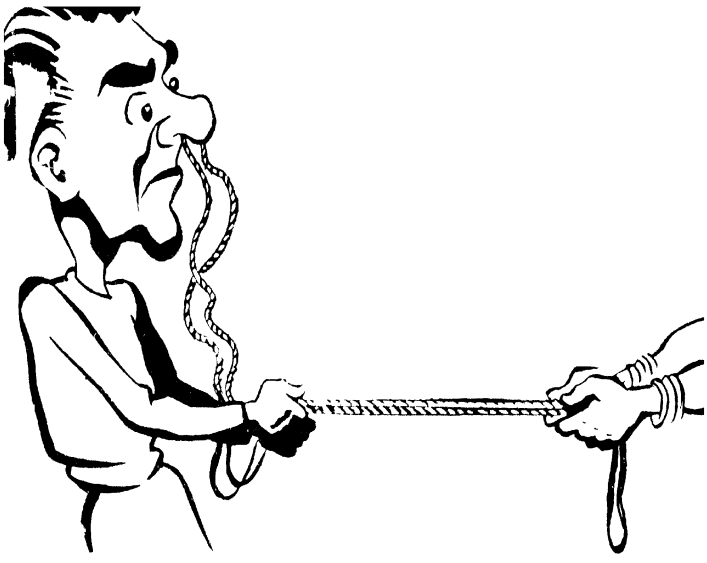

यह झगड़ा मुझे पसन्द नहीं

जो प्रातःकाल उठ जल्दी
दीये जलते घर आजाऊ।
फिर ठीक तुम्हारी रुचि का भोजन,
नियत समय पर खाजाऊ।
मैं आज मिला किससे, कब, क्यों
यह तुम्हे शाम को बतलाऊ।
राजी से या नाराजी से
इकला न सिनेमा जापाऊ।
मैं कभी तुम्हारी किसी सहेली
से भी हँसूँ, न बोल सकू।
धोके से भी सन्दूक तुम्हारा
कभी नही मै खोल सकू।
तुम मेरी डाक स्वय लेकर
पहले ही पढने लग जाओ।

मिलने वाले मित्रों को भी
दरवाजे से ही टरकाओ।
मेरे पढ़ने के कमरे का
तुम करती ठीक प्रबन्ध नहीं।
यह झगड़ा मुझे पसन्द नहीं!

जी, मेरी दाढी बढ़ी हुई है,
बढ़ने दो तुम काम करो।
जी, फटा कोट ? फट जाने दो,
जाकर के तुम आराम करो।
टूटे जूते ? सिल जाएँगे, श्रीमती,
आप चिन्ता न करें।
मैले कपड़े ? धुल जाएँगे,
किस्सा भी आप तमाम करें।
मैं नहीं टहलने रात रहे
इतनी जल्दी जासकता हूँ।
बस माफ करो अब च्यवनप्राश
मैं और नहीं खासकता हूँ।
दिन मे कब अवसर मिलता है,
जी, मुझे रात मे पढने दो।
तुम भी सोओ, जल्दी उठना,
मत व्यर्थ बात को बढने दो।
हैं-है ! ठहरो, क्या करती हो,
करना चिराग को मन्द नहीं।
यह झगड़ा मुझे पसन्द नहीं!

शीला के घर पैकिट भेजा ?"
जी, कल जरूर भिजवाऊंगा।
"इयरिंग के दाम पुछ आये ?"
जी, कल जरूर पुछवाऊंगा।

"चाचाजी को चिट्ठी लिखदी ?"
हाँ, लिख छोड़ी, कल डालूंगा।
मैके से चली पार्सल को भी
कल जरूर मँगवालूंगा।
क्या दरजी अभी नही आया ?
मैं कल उसको बुलवाऊंगा।
चप्पल के भी दो-चार सैट
तुमको दिखलाने लाऊंगा।
क्या धोबी, वह भी भाग गया ?
यह अभी सभी होने को था,
अच्छा बाबा, पीछा छोड़ो,
कल उसे खोजने जाऊंगा।
मैं सब कुछ करूं मगर फिर भी
तुम बन्द करोगी द्वंद नही।
यह झगड़ा मुझे पसन्द नही !

तुलसी मेरा

उपकार करो

बस एक बार की डाट
काम कर गई तुम्हारे जीवन मे।
तुम निकले घर से राम नाम की
रट लेकर अपने मन मे।
लिख दिये सैंकड़ो ही पन्ने,
छप जाते प्रेस अगर होते,
रायल्टी से ही ऐश किया करते
बैठे बूढ़ेपन मे।

हे कवि-कुल-गुरु ! पथ-निर्देशक,
मैं घड़ी-घड़ी, प्रति पल, प्रति क्षण
चल कर तेरी ही चरणो पर
यह बाजी हारा जाता हूँ।
मैं रोज-रोज अपनी 'उन' से,
रह-रह दुत्कारा जाता हूँ।
मैं जितना ही गम खाता हूँ,
उतना फटकारा जाता हूँ।

मैं रोज रात को तय करता—
कल सुबह छोड़दूंगा यह घर।
इस समय न मिल सकते तांगे,
इस समय न मिल सकता नौकर।
धोबी से कपड़े कब आये,
कब तार दिया है मित्रों पर!
गाड़ी का टाइम ज्ञात नहीं
यह मुश्किल है सब से ऊपर।

सुनती हो, कल मैं जाऊंगा,
जिस तरह गये थे कभी बुद्ध।
मैं वापस कभी न आऊंगा
लिनलिथगो-सा असहाय क्रुद्ध।
ऐ गोपा! सोती रहो, आज
यह नया तथागत जाएगा।
आंखें खोलो, दर्शन करलो,
फिर पंछी हाथ न आएगा।

तुम जो आजादी चाह रहीं
मैं कभी नहीं सह सकता हूँ।
मैं तो इस घर मे अब केवल
वेवल बन कर रह सकता हूँ।
'अच्छा वेवल, अब देर हुई,
सोओ पड़ौस जग जाएगा।
कल लेट अगर आफिस पहुंचे
तो बुद्ध शुद्ध होजाएगा।

वह और दूसरे होते है,
जिनके कि बात लग जाती है।
करने वालो मे कहने की शेखी
कम देखी जाती है।

तुलसी मेरा उपकार करो,
इस घर से अब उद्धार करो।
मेरे इस दुर्बल मानस को
हरि भजने पर लाचार करो।

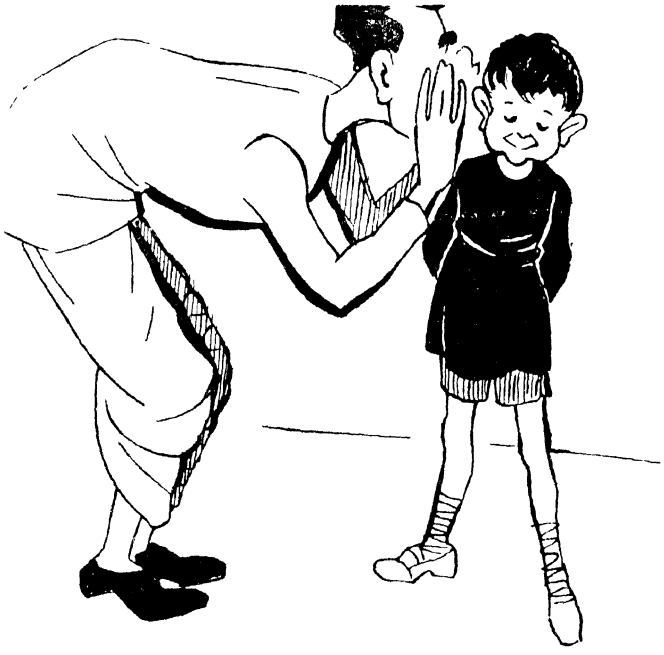

जन्माष्टमी प्रसंग

प्यारे मुन्नू, अपनी मा से
कहना—बाबूजी आये है।
कुछ उनके होश उडे-से हैं,
कुछ लगते वे घबडाए हैं।
कुछ उनका दिल बैठा जाता,
कुछ उनको चक्कर आते हैं,
कुछ देख रहे वे इधर-उधर
ओठो पर जीभ फिराते है।

तुम चलो, बुलाया है जल्दी,
तबियत उनकी घबड़ाती है।
वे कहते हैं कुछ बात, मगर
मुँह-की-मुँह मे रह जाती है।

प्यारे भय्या, सब ऐसे ही
जाकर के हाल सुना देना।
तुम समझदार के लड़के हो
मन से भी चार बना देना।

"बस बहुत हुआ, सुन लिया सभी
मुझको बहकाने जाते हो।
कुछ आगे-पीछे का न होश,
बच्चे को झूंठ सिखाते हो।
मैं कहती हूँ तुम एक रोज भी
भूख नही सह सकते हो?
इस झूंठ बोलने की आदत से
बाज नही रह सकते हो?
सब धर्म घोलकर पी डाला,
सब कर्म गृहस्थो के छोड़े।
इस घर के पथ मे रोज-रोज
क्यो आप बिछाते हैं रोडे?"

क्या कहती—मैं कि विधर्मी हूँ?
देखो सम्हाल कर बात करो।
बच्चो को झूंठ सिखाता हूँ,
यह कहकर मत उत्पात करो।
मे सनातनी हूँ, रोज नहाता,
घिसकर तिलक लगाता हूँ।
वेदो की करता बात और
गीता के अर्थ बताता हूँ।

तुम सुनना मेरा आज लेक्चर
लालाजी के मन्दिर मे,
मैं कृष्णचन्द्र के जीवन को
क्या खोल-खोल समझाता हूँ!
मैं सत्य-अहिसा का पालक
बच्चो को झूंठ सिखाऊंगा?
तुम भी कैसी बातें करती,
मैं तुमको ही बहकाऊंगा!

पर मैं क्या करू, बात यह है
तबियत मेरी घबड़ाती है।
यह पाक-पँजीरी की खुशबू
आँतो मे कुलल मचाती है।
यह धर्म-कर्म और नियम-व्यवस्था
सभी पेट की खातिर है।
यह ही खाली रह गया
कहो, संसार कहाँ फिर स्थिर है?

फिर आज दिवस है आनँद का
मैं मन को क्लेश नही दूगा।
कुछ थोड़ा-सा ही ले आओ
मैं और विशेष नही लूंगा।
यह उनही का है ज म-दिवस
जो खाते और मचलते थे।
गोरस की चाट पड़ी ऐसी
चोरी के लिए निकलते थे।

भगवान् कृष्ण व्रत नहीं चाहते
दावे से कह सकता हूँ।
फिर उनकी मर्जी के खिलाफ
भूखा कैसे रह सकता हूँ?

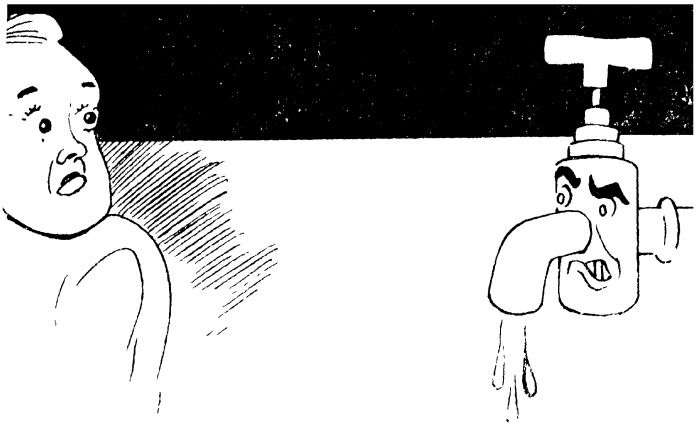

स्नान धर्म

तुम कहती हो कि नहाऊँ मैं !
क्या मैंने ऐसे पाप किये, जो इतना कष्ट उठाऊ मैं ?

क्या आत्म-शुद्धि के लिए ?
नहीं, मैं वैसे ही हूँ स्वय शुद्ध ,
फिर क्यों इस राशन के युग में
पानी बेकार बहाऊं मैं ?

यह तुम्हे नही मालूम
दालदा भी मुश्किल से मिलता है ,
मैं वैसे ही दुबला-पतला
फिर नाहक मैल छुड़ाऊं मैं ?

औ' देह-शुद्धि तो भली आदमिन,
कपड़ो से होजाती है!
ला कुरता नया निकाल
तुझे पहनाकर अभी दिखाऊं मैं!

"मै कहती हूं कि जनम तुमने
बामन के घर मे पाया क्यो?
वह पिता वैष्णव बनते है
उनका भी नाम लजाया क्यो?"

तो बामन बनने का मतलब है
सूली मुझे चढ़ा दोगी?
पूजा-पत्री दो दूर रही
उल्टी यह सख्त सजा दोगी!

(अरे) बामन तो जलती भट्टी है,
तप-तेज-रूप, बस अग्निपुञ्ज!
क्या उसको नल के पानी से
ठंडा कर हाय बुझा दोगी?

यह ज्वाला हव्य मांगती है–
घी, गुड़, शक्कर, सूजी, बदाम!
क्या आज नाश्ते मे मुझको
तुम मोहनभोग बना दोगी?

"बस, मोहनभोग, मगद, पापड़ ही
सदा जीभ पर आते हैं।
स्नान, भजन, पूजा, संध्या
सब चूल्हे में झुक जाते हैं।"

तो तुम कहती हो—मैं स्नान,
भजन, पूजन, सब किया करू !
जो औरों को उपदेश करूं,
उसका खुद भी व्रत लिया करूं ?

प्रियतमे ! गलत सिद्धान्त,
एक कहते हैं, दूजे करते हैं !
तुम स्वयं देखलो युद्ध-भूमि मे
सेनापति कब मरते हैं ?

हिटलर बाकी, चर्चिल बाकी,
बाकी ट्रूमैन विचारा है।
तब तुम्ही न्याय से कहो
कौन ऐसा अपराध हमारा है ?

मैं औरो के कन्धो से ही
बन्दूक चलाया करता हूँ।
यह धर्म, कर्म, व्रत, नियम
नहीं मे घर लाया करता हूँ।

फिर तुम तो मुझे जानती हो
मैं सदा झिकाया करता हूँ।
कार्तिक से लेकर चैत तलक
मैं नही नहाया करता हूँ।

कहना सुनना

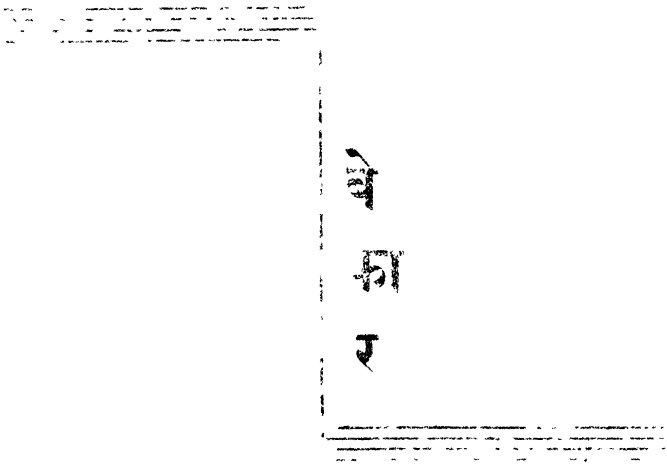

गया

मैं कितनी बार कह चुका हूँ—
जब कोई पास में बैठा हो,
तो अपनी बानर-सेना को
अपने वश मे कर लिया करो।
खाना न सही, शर्बत न सही,
दो—चार बार के कहने पर,
मैं नहीं मँगाता पान
अरे, पानी तो भिजवा दिया करो!

पर मलिन वेश, क्रोधित स्वर में,
तुम बड़-बड़ करती-सी अक्सर;

मेरे · कमरे के आस-पास
आकर लहराया करती हो।
फिर आँख बचाकर आखो मे
मुझको धमकाया करती हो।
किस तरह लोग उठकर जाएँ
तुम यही मनाया करती हो।
इन छोटी-छोटी बातो को
समझाया बारम्बार गया!
कहना-सुनना बेकार गया!

घर से बाहर जाना हो तो
रह-रह कर ठाठ बदलती हो!
तुम अब भी अपने को आखिर
शोड़षी मानकर चलती हो?
हमको इसमे एतराज नहीं,
माना अब भी तुम सुन्दर हो।
जग चाहे जो कुछ कहे
मगर मुझको तुम सबसे ऊपर हो।
पर बाहर जाते समय सिर्फ क्यो
रूप निखारा जाता है?
साड़ी-जम्पर का मेल तभी
क्यो सिर्फ विचारा जाता है?
(अरे) हम भी सौन्दर्य-पारखी हैं,
टुक ध्यान इधर भी दिया करो!
कुछ और नहीं तो ठीक तरह
पल्ला सिर पर लेलिया करो।
खुद तुमको तो इन बातो का
बाकी रह नहीं विचार गया!
कहना-सुनना बेकार गया!

अपनी शादी को हुए, कम नहीं
बारह वर्ष व्यतीत हुए।
मैं तब से, सिर्फ तुम्हारा हूँ,
विश्वास बात का किया करो।
कुछ इधर-उधर की बातों पर
जो अक्सर झूंठी होती हैं,
दुश्मन जिनको फैलाते हैं,
मत ध्यान जरा भी दिया करो।

मै पत्नीव्रत का पालक हूँ,
मैं गीता का अभ्यासी हूँ,
मे स्वस्थ चित्त का व्यक्ति,
मुझे साधारण कर मत लिया करो।
मैं सिर्फ तुम्हारे, शेष जगत के
नारिवर्ग को क्या जानूं ?
बस मुझको साधू समझ सदा
अपने गुस्से को पिया करो।
पर तुम तो गलत समझती हो,
समझा-समझाकर हार गया।
कहना-सुनना बेकार गया !

आ या

ता ज़ा

अ ख बा र

प्रि ये

आया ताजा अखबार प्रिये !

लो पढ़ो, हरेक मोर्चे पर अब जीत रही सरकार प्रिये !

हर रोज हमारे वायुयान
टन-के-टन बम बरसाते है !
हर रोज हजारो ही दुश्मन
मारे या पकड़े जाते हैं !
हर रोज युद्ध के बाद, विश्व
की ठीक व्यवस्था क्या होगी ,
सुलझाने को यह प्रश्न
नये प्रस्ताव सामने आते है !

अब सोच-समझकर मित्रलोग
आगे को कदम बढ़ाते हैं।
अब सोच-समझकर के ही सब
वक्तव्य प्रेस में जाते हैं।
कुछ सोच-समझकर के ही तो
मिस्टर चर्चिल अब बार-बार,
बस बात-बात मे अमरीका
जाने का कष्ट उठाते हैं।
तुम भी तो कुछ सोचो-समझो,
जब सोच रहा ससार प्रिये!
आया ताजा अखबार प्रिये!

"ये झोला लो, जाओ बजार
सब्जी ताजी लेते आना।
आलू छै आने सेर, कही
ज्यादा पैसे मत देआना।
मैं अभी बताए देती हूँ
नौ बजे कहीं फिर देर न हो,
तुम इधर-उधर की बातों मे
बैठे न कहीं पर रह जाना।"

ऐ, शाक बना लेना पीछे
अखबार पढो पहले रानी!
लो देखो मरने वाली है
हिटलर-मुसोलिनो की नानी!
अब बरमा छिनने वाला है
यह सोच-सोच करके ही बस,
तोजो के दिल मे धड़कन है,
आँखो मे भर आता पानी।
मैं कहता हूँ इस ब्रिटिश शक्ति का
किसने पाया पार प्रिये!
आया ताजा अखबार प्रिये!

"अखबार तुम्हारे झूंठे हैं,
तुम झूठो के सरताज खरे।
कल ही तो सब चिल्लाते थे–
हम हाय मरे, हम हाय घिरे!
जो वापस कदम हटाने को भी
विजय बताते आये हैं,
ऐसे लोगों की बातों का
विश्वास बताओ कौन करे?"

ओ भागवान्! ला झोला दे,
चुप रह जो कोई सुनलेगा।
तेरा तो क्या होना-जाना,
मुझको डिफेन्स मे लेलेगा।
तू युद्ध-नीति को क्या जाने,
कैसी से हाय पड़ा पाला!
ला छै आने के सेर मुझे
आलू वह कुंजड़ा क्या देगा!
तुझसे तो इन सब बातो का
कहना-सुनना बेकार प्रिये!
आया ताजा अखबार प्रिये!

दिल्ली

★

●

★

का

★

●

★

तो ह फा

चार चीजस्त तुहफये दिल्ली-
खांसी, जुकाम, बुखार, ताप-तिल्ली।

इन चारों को हम दोनों ने
आधा मिल-मिलकर बाट लिया।
खांसी-जुकाम खुद लेकर के
तिल्ली-बुखार दे उन्हे दिया।
मैं टी-टी करता रहता हूँ,
वे हाय-हूय चिल्लाती है।
मै अपना गला खखार रहा,
वे अपना पेट दबाती हैं।

मैं कहता हूँ—दिल्ली छोड़ो ,
वे कहती है—'ये ठीक नही।
दिल्ली मे धन्धा अच्छा है ,
कुछ रोज बसो तुम अभी यही।''
मैं समझता उनको—रानी ,
तन्दुरुस्ती बडी नियामत है।''
वे झल्लाती—''आरही अभी
ऐसी क्या बड़ी कयामत है ?''
मैं कहता हूँ—मुझ पर न सही ,
तुम पर तो आफत भारी है।
वे कहती हैं—''चाटो न मगज ,
मुझको चढ़ रही तिजारी है।

लो चढ़ी तिजारी—''है-है-हूँ-हूँ !
ठड लगी बिस्तर लाओ।
दो डाल रजाई ऊपर से
मोटा-सा कम्बल ले आओ।
ये खिड़की करदो बन्द ,
हवा इसमे से ठडी आती है।
सर मे होता है दर्द और
तबियत बेहद घबड़ाती है।''

मैं कहता था खाओ कुनैन ,
पर तुम मेरी कब सुनती हो ?
उल्टी-ही-उल्टी चलती हो ,
अपनी-ही-अपनी धुनती हो।
मैं कहता था—निरहार रहो ,
तुम आँख बचाकर खाती थी।
मैं कहता था—मच्छर मारो ,
तुम हिसा-हिसा गाती थी।

अब उछल-उछलकर खटिया मे
तुम शय्या-नृत्य करो रानी !
मै नही पास मे बैठूंगा,
मैं नही पिलाऊंगा पानी ।

"कड़वी कुनैन थू-थू-थू-थू !
मैं कभी नही खासकती हूँ ।
प्यारी दिल्ली को छोड नही
हरगिज बाहर जासकती हूँ ।
तुम नही पास मे बैठोगे,
तुम नही पिलाओगे पानी ?
तो अच्छा देखी जाएगी,
ऐसी भी क्या है हैरानी !
अब मैं देखूंगी कौन सुबह का
खाना जल्द बनाएगा ?
अब मै देखूंगी कौन तुम्हे
धो-धो कपड़े पहनाएगा ?
अब मैं देखूंगी कौन तुम्हारे
बच्चों को समझाएगा ?
अब मै देखूंगी कौन तुम्हारे
घर का खर्च चलाएगा ?

नया रोज़गार

जाओ तुमको होरही देर
मै भी यह ठीक मानती हूँ ।
तुम जो कुछ करने जाते हो
मैं अच्छी तरह जानती हूँ ।
कल शकुन्तला की बड़ी बहन
मुझको बतलाने आई थी ।

तुम उधर झाँकते आते हो
वह कड़ी शिकायत लाई थी।
जब घर-पड़ौस की यह हालत,
तो बाहर क्या करते होगे?
मैं जान गई हूँ तुम आगे
तकलीफ मुझे भारी दोगे···"

\+ + +

रे दिल, अब तो खाँसो-खाँसो,
खाँसी मे छुपी भलाई है।
ऐ पैर, चलो लपको बाहर
जूड़ी उनको चढ़ आई है।

— ——

पत्नी को परमेश्वर मानो

पत्नी को परमेश्वर मानो !

यदि ईश्वर मे विश्वास न हो,
उससे कुछ फल की आस न हो,
तो अरे, नास्तिको ! घर बैठे,
साकार ब्रह्म को पहचानो !
पत्नी को परमेश्वर मानो !

वे अन्नपूर्णा, जग-जननी,
माया हैं—उनको अपनाओ।
वे शिवा, भवानी, चण्डी है,
तुम भक्ति करो—कुछ भय खाओ।
सीखो पत्नी-पूजन-पद्धति,
पत्नी-अर्चन, पत्नीचर्या,
पत्नी-व्रत पालन करो और
पत्नीवत्-शास्त्र पढ़े जाओ।

अब कृष्णचन्द्र के दिन बीते,
राधा के दिन बढ़ती के है।
यह सदी बीसवी है भाई,
नारी के ग्रह चढ़ती के है।
तुम उनका छाता, कोट, बेग
ले पीछे-पीछे चला करो,
सन्ध्या को उनकी शय्या पर
नियमित मच्छरदानी तानो!
पत्नी को परमेश्वर मानो!

तुम उनसे पहले उठा करो,
उठते ही चाय तयार करो।
उनके कमरे के कभी अचानक,
खोला नही किवाड़ करो।
उनकी पसन्द से काम करो,
उनकी रुचियां को पहचानो,
तुम उनके प्यारे कुत्ते को,
बस चूमो-चाटो प्यार करो।

तुम उनको नाविल पड़ने दो,
आओ कुछ घर का काम करो।
वे अगर इधर आजायें कही,
तो कहो—प्रिये, आराम करो।
उनकी भौहें सिगनल समझो,
वे चढ़ी कही तो खैर नही,
तुम उन्हे नही डिस्टर्ब करो,
ऐ हटो, बजाने दो प्यानो!
पत्नी को परमेश्वर मानो!

तुम दफ्तर से आगये, बैठिए,
उनको क्लब में जाने दो।
वे अगर देर से आती हैं,
तो मत शंका को आने दो।
तुम समझो वह हैं फूल,
कहीं मुर्झा न जायँ घर मे रहकर!
तुम उन्हे हवा खा आने दो,
तुम उन्हे रोशनी पाने दो!

तुम समझो "ऐटीकेट" सदा
उनके मित्रो से प्रेम करो।
वे कहाँ, किसलिए जाती है—
कुछ मत पूछो, ऐ 'शेम' करो!
यदि जग मे सुख से जीना है,
कुछ रस की बूँदे पीना है,
तो ऐ विवाहितो, आँख मूँद,
मेरे कहने को सच जानो!
पत्नी को परमेश्वर मानो!

मित्रो से जब वह बात करे
बेहतर है तब मन सुना करो।
तुम दूर अकेले खडे खडे
बिजली के खम्बे गिना करो।
तुम उनकी किसी सहेली को
मत देखो, कभी न बात करो।
उनके पीछे उनके दराज से
कभी नहीं उत्पात करो।

तुम समझ उन्हें स्टीमगैस,
अपने डिब्बे को जोड़ चलो।
जो छोटे स्टेशन आएँ, उन
सबको पीछे छोड़ चलो।
जो सँभल कदम तुम चले-चले
तो हिन्दू सद्गति पाओगे,
मरते ही हूरें घेरेंगी, तुम
चूको नहीं मुसलमानो।
पत्नी को परमेश्वर मानो!

तुम उनके फौजी शासन में
चुपके राशन ले लिया करो।
उनके चैकों पर सही-सही
अपने दसखत कर दिया करो।
तुम समझो उन्हें "डिफैन्स एक्ट"
कब पता नहीं क्या कर बैठें?
भारत की सरकार, नहीं
उनसे सत्याग्रह किया करो।

छै बजने के पहले से ही
उनका करफ्यू लग जाता है।
बस हुई जरा-सी चूक कि
झट ही "आर्डिनैंस" बन जाता है।
वे "अल्टीमेटम" दिये बिना ही
युद्ध शुरू कर देती हैं,
उनको अपनी हिटलर समझो,
चर्चिल-सा डिक्टेटर जानो!
पत्नी को परमेश्वर मानो!

सब गांधीजी की माया है

यदि जीहजूर के कमरे में
कुत्ता भी आकर छींक जाय,
तो मैं तो यही सुझाऊंगा—
यह कांग्रेस की छाया है।
सब गाँधीजी की माया है!

यदि पढ़े-लिखे दो-चार व्यक्ति
बातें करते दिखलाई दें।
कुछ उनके देसी कपड़े हों,
देसी-से शब्द सुनाई दें।
फिर उनकी शकलें कैसी हों,
बातें भी चाहे जैसी हों,
पर मैं तो पकड़ बताऊंगा—
इनमें षड्यन्त्र समाया है!
सब गाँधीजी की माया है।

कालिज मे जितने भी लड़के
धोती-कुरते मे आते है।
या वे व्यापारी जो हिन्दी का
"हिन्दुस्तान" मँगाते है।
या वे जो नित्य टहलने को
जाते हैं मिलकर पाँच-सात,
मैं सच कहता हूँ इन सबने
मिलकर विद्रोह उठाया है!
सब गांधीजी की माया है!

हिन्दी के रीडिग रूम और
देसी अखबारो के दफ्तर।
कुछ वैद्य-डाक्टरो की दुकान,
कुछ ।बंगाली लोगो के घर।
ये बम बनने के अड्डे है,
इनमे षड़यन्त्र सुलगते है,
इन लोगो ने ही भारत मे
रह-रह जापान बुलाया है!
सब गांधीजी की माया है!

यदि खादी के कपड़े पहने,
गांधी की टोपी दिये हुए।
दिखलाई युवक पडे जाता,
अखबार हाथ मे लिये हुए।
तो पीछे से उसको पकडो,
देखो, उस पर पिस्तौल न हो,
वह हिसक है, हत्यारा है,
बागी है, भागा आया है!
सब गांधीजी की माया है!

गांधी, गांधी ! यह आंधी है !
क्यों तुमने इसको छोड़ दिया ?
क्यों जिन्ना साहब का हुजूर।
पजाबी सपना तोड़ दिया ?
मैं 'जीहजूर' का सेवक हूँ,
मालिक को याद दिलाता हूँ,
यह 'भारत छोड़ो' कहते हैं,
इन पर जापानी साया है !
सब गांधीजी की माया है !

मैं

महावीर जी

जा ऊं गी

मैं महावीरजी जाऊंगी !

ऐ भगवन् ! इन्हें सुबुद्धी दो, मन-भर परसाद चढाऊंगी ।

मैं कितनी बार कह चुकी हूँ—
लेखन कोई व्यवसाय नही ।
ये भूखे मरने का धन्धा
इसमें होती है आय नही ।
पर तुम मेरी किस्मत को ले
इसमें ही चिपटे बैठे हो,
इस युद्धकाल मे भी तुमको
मिल रही नौकरी हाय नही !

पुचकार थकी, फटकार थकी,
मैं कहूँ अकल कब आएगी ?
या मेरी सारी उम्र युंही,
रोते-चिल्लाते जाएगी ?
कल बहन सुभद्रा कहती थी—
जादू-टौना भी अजमाओ,
तुम अगर नही मानोगे तो
गंडा करवाकर लाऊंगी।
मैं महावीरजी जाऊंगी !

धोबी को देखो—मुश्किल से
छै पैसे कपडे लेता है।
नाई को देखो—दो आने में
'शेव' बना कर देता है।
मोची को देखो—सुनती हूँ
दस-बारह रोज कमाता है।
बढ़ई का और लुहारी का
रुजगार जोर से चेता है।

पर तुम हो खबर सुनाते हो
कागज पर भी कन्ट्रोल हुआ।
अखबारी पन्ने घट निकले
सब लिखना-पढ़ना गोल हुआ।
तुम लिये 'तीस परसैंट पेट को
एक तिहाई कर डालो,
चांदी की चीजे बची, इन्हे
कल मैके मे पहुँचाऊंगी।
मैं महावीरजी जाऊंगी !

है अभी लड़ाई बहुत दिनों
मेरी मानो, कुछ नाम करो।
मैं रुपये तुम्हें मँगा दूंगी
ठेकेदारी का काम करो।
फिर देखो, एक साल ही में
ऊंची बिल्डिंग बन जाएगी।
तुम दफ्तर वाले लोगों से तो
पैदा दुआ-सलाम करो।

कुछ और नहीं तो राशन के
दफ्तर में भर्ती होजाओ।
शर्मा साहब लगवा देंगे
तुम उनको अर्जी दे आओ।
फिर बने दरोगा फिरो,
दुकानों से भी चौथ वसूल करो
मैं चावल-शक्कर का घर में
चुपके रुजगार चलाऊंगी!
मैं महावीरजी जाऊंगी!

यदि मैं होती जो पुरुष,
पुलिस में झटपट नाम लिखा लेती।
चौराहे पर ड्यूटी देती,
तागों पर टैक्स लगा देती।
फिर अगर कहीं तुम होते मेरी
घरवाली, कामिनि सुन्दर,
तो सच मानो सोने की तगड़ी
जरूर ही पहना देती।

मैं कहती हूँ तुम सिविल क्लर्क
बनने में क्यों घबड़ाते हो ?
क्यों नहीं पिच्हत्तर रुपे माह मे
बँधे-बँधाये लाते हो ?
मै इन्हीं पिच्हत्तर मे से तुमको
गरम सूट सिलवा दूंगी,
और अपने लिए खरीद नई
साड़ी बनारसी लाऊंगी !
मैं महावीरजी जाऊंगी !

मै कहते-कहते हार गई—
तुम समय देखकर चला करो ।
दुनिया मरती है, मरने दो,
तुम पहले अपना भला करो ।
इस लिखने मे भी बरकत है,
पर तुम उसको पहचानो तो,
लो, अपनी कलम-कटारी से
काटा जापानी गला करो ।

फिर देखो तुमको गवर्मिन्ट
पलकों पर अधर उठाती है ।
फिर देखो कम्यूनिस्ट टोली,
छाती से तुम्हें लगाती है ।
फिर देखो सारे आलोचक भी
प्रगतिशील बतलाएँगे ।
फिर देखो मैं भी "कामरेड" कह
तुम से हाथ मिलाऊंगी ।
मैं महावीरजी जाऊंगी !

पर हाय ! तुम्हे क्या समझाऊं ,
कब समझाने में आते हो ?
मेरी सीधी-सच्ची बातो पर
उल्टे गीत बनाते हो !
तो यही सही, यह भी धन्धा
अच्छा है, इतना और करो ;
लिख-लिखकर अपने लेख
क्यो नही मेरे नाम छपाते हो ?

मैं सच कहती हूँ इस प्रकार
तुम अपनी वकत बढ़ालोगे !
मिलने वालो की नजरो में
तुम खुद को खूब चढ़ालोगे।
निश्चय परिचय का क्षेत्र
तुम्हारा कई गुना बढ़ जाएगा ,
मे स्वयं किसी सम्पादक से
कहकर के जगह दिलाऊंगी !
मैं महावीरजी जाऊंगी !

दि वा ली

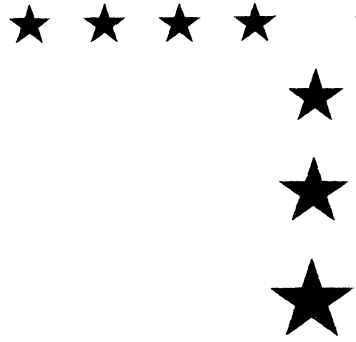

के दिन

"तुम खील-बताशे ले आओ,
हटरी, गुजरी, दीवट, दीपक।
लक्ष्मी-गणेश लेते आना,
झल्लीवाले के सर पर रख।

कुछ चटर-मटर, फुलझड़ी, पटाके,
लल्लू को मँगवाने हैं।
तुम उनको नहीं भूल जाना,
जो खाड़-खिलोने आने हैं।

फिर आज मिठाई आएगी,
शीला के घर पहुंचानी है।
नल चले जाएँगे जल्द उठो,
मुझको तो भरना पानी है।"

"है झूंठ चलेगे नल दिन-भर
क्या मालुम नहीं दिवाली है ?
इस गवर्मिन्ट के शासन मे
पानी की क्या कंगाली है।

पर खील मँगाती हो सुनकर
दिल खील-खील होजाता है।
यह तुम्हे नहीं मालूम,
खील-चाँवल का कैसा नाता है ?

चाँवल की खीले बनती है.
वह चाँवल 'चोरबजार' गया।
सो मिलता है बे-मोल, सोचकर,
खील मँगाओ मत कृपया।

वे खाँड-खिलौने बने नहीं,
शक्कर पर प्रिय कन्ट्रोल हुआ।
होगई मिठाई तेज कि खोआ
भी बजार से गोल हुआ।

फिर रहम करो, मत चटर-मटर
फुलझड़ी पटाके मँगवाओ।
इनमे विस्फोटक चीजे है
सुन लेगा कोई भय खाओ।

हुं: मिट्टी के लक्ष्मी गणेश का
पूजन भी क्या करती हो ?
मैं लम्बोदर, गजदन्त, चरण
मेरे क्यो नही पकडती हो ?

ओ मैं तो सदा-सदा से तुमको
लक्ष्मी कहता आया हूँ।
ऐ गृहलक्ष्मी, घर की शोभा,
मैं इन चरणों की छाया हूँ!

जिस दिन से घर मे आई हो
उस दिन से सदा दिवाली है।
मे अन्दर से धनवान, सिर्फ
बाहर से ही कगाली है।

सो इसकी चिन्ता नही,
आज मैं खुद ही शेव बना लूंगा।
है अभी चमक जिसमे बाकी
वह काला कोट निकालूंगा।

शीला को लेना साथ रोशनी
तुमको आज दिखाएँगे।
घण्टेघर के चौराहे पर
बस चाट-पकौड़ी खाएँगे।

लल्लू को लेंगे गुब्बारा
वह हँसता-हँसता आएगा।
इस भाँति दिवाली का मेला,
सस्ते ही मे हो जाएगा।

एजी कहूं कि ओजी कहूं

'ऐजी' कहूँ कि 'ओजी' कहूँ,
'सुनोजी' कहूँ कि 'क्योजी' कहूँ,
'अरे ओ' कहूँ कि 'भाई' कहूँ,
कि सिर्फ 'भई' ही काफी है?
अब तुम्ही कहो, क्या कहूँ?
तुम्हारे घर में कैसे रहूँ?

'सरो' कहूँ या 'सरोजनी',
पर नाम न लेने तुम देती!
तो 'जग्गो की जीजी' कहदूं?
ऐ 'शीला की संगिनि' बोलो,
तुम मुरली की महतारी हो,
तुम हरकिसुना की प्यारी हो,

तुम 'चन्द्रकला की चाची' हो,
तुम 'भानामल की भूआ' हो,
तुम हो 'गुपाल की बहू',
कहो क्या कहूँ?
तुम्हारे घर मे कैसे रहूँ?

कुछ नये नाम ईजाद करूं,
प्राचीन प्रथा बर्बाद करूं,
या रूप, शील, गुण, कर्मों से ही
तुम्हे पुकारूं याद करूं?
कि 'बुलबुल' कहूँ कि 'मैना' कहूँ,
कि मेरी 'सौन चिरैय्या' बोलो तो,
ये रसमय अपनी चौंच
'कोइलिया' खोलो तो?

तुम सकल-चम्मच बजा-बजाकर
अपना काम चला लेती।
तो मुझको भी क्यो नहीं
कनस्तर टीन-सा मंगवा देती।

या खुद ही किसी रोज
देवी के मेले मे मैं जाऊंगा।
औ' छोटी-सी डुमडुमी एक
अच्छी खरीद कर लाऊंगा।
फिर सम्बोधन की सकल समस्या
पल मे हल होजाएगी।
जब कभी बुलाना होगा तो
डुम-डुम डुमडुमी बजाऊंगा।

तुम रूंठ गई, ये ठीक नही,
तो कहो अटकनी कहूँ ?
मटकनी कहूँ, चटखनी कहूँ ?
अब तुम्ही कहो क्या कहूं ?
तुम्हारे घर में कैसे रहूँ ?

मैं 'हनी' कहूँ या 'डियर' कहूँ,
या 'डार्ल' पुकारूं अंग्रेजी ?
या स्वयं देवता बनजाऊं,
औ' तुम्हें पुकारूं देवीजी ?

ये देवी नही पसन्द
कि 'मैंने कहा' इसे भी रहने दो।
तुम 'मेरी कसम' मान जाओ,
बस 'कामरेड' ही कहने दो।

ऐ कामरेड, घर गवर्मिन्ट,
मेरी स्टालिन, बोलो तो ?
मै चर्चिल कब का खड़ा
अरी, फौलादी मुखड़ा खोलो तो ?

कि 'बिजली' कहूँ कि 'इन्जिन' कहूँ,
कि मेरी 'बख्तरबन्द टैंक गाड़ी' ?
अब तुम्ही कहो क्या कहूँ ?
तुम्हारे घर मे कैसे रहूँ ?

पत्र का उत्तर

पूछा है एक श्रीमती ने
चिट्ठी लिखकर सम्पादक को
"कवि यह जो गीत लिखा करता,
वह कौन, कहाँ पर रहता है?
रंग कैसा है, कद कैसा है,
आदत, व्यवहार, चलन कैसा.
उसकी शादी होगई या कि
अविवाहित है, आवारा है?"

कर कृपा मुझे सम्पादकजी ने
चिट्ठी वह दिखलादी है।
या कहूँ कि मेरे जीवन में
एक नई रोशनी ला दी है।

मैं अस्त-व्यस्तपन छोड़,
धुले कपड़ो की आदत डाल रहा।
बस उस दिन से ही तेल डाल,
मैं टेढ़ी मॉग निकाल रहा।

कुछ ऐसा मुझको हुआ कि
अब तो रोज नहाया करता हूँ।
हनुमान विनय सुनले मेरी
'चालीसा' गाया करता हूँ।

सुनता हूँ सुबह टहलने से
चेहरे पर रौनक आती है।
सुनता हूँ सांस रोकने से
छाती चौड़ी होजाती है।

मैं सांस रोकता, दौड़ा करता,
गाजर खाया करता हूँ।
मैं भर-भर हवा, देख शीशे मे
गाल फुलाया करता हूँ।

अब अपने पूर्व परिचितो से
कम मिलता हूँ, कतराता हूँ।
मैं लम्बे-लम्बे डग भरता
टेढ़ा-ही-टेढ़ा जाता हूँ।

ये राह निकलते नर-नारी
जो मुझको ताका करते हैं।
मैं अनुभव करता हूँ मेरे
पौरुष को आंका करते हैं।

ये सोचा करते हैं शायद—
"देखो क्या गबरू जाता है!
है चाल मस्त गैंडे जैसी
बारहसिंगा शरमाता है।"

मैं नजरों से हैरान, निगाहें
मुझको देख हसा करतीं।
ये गली-मुहल्ले की परिचित
भाभियाँ आवाज़ कसा करतीं।

कहतीं है—"लाला, आज कहाँ,
तुम लपके-लपके जाते हो?
यह नया कोट, चप्पले नईं,
कुछ बदले-से दिखलाते हो?

हाँ, सचमुच ही मैं बदल गया हूँ,
इस चिट्ठी के आने से।
ज्यों मरा सांप जी उठता है,
पूरबी हवा लग जाने से।

मैं चिट्ठी की लिपि पर से ही
अनुमान लगाया करता हूँ।
तुम सुन्दर हो, सुमनागी हो,
विदुषी ठहराया करता हूँ।

तुम यू० पी० की रहने वाली,
लाहौर बस गईं जाकर हो।
ऐ सुमुखि! मुझे मालूम होता,
तुम सचमुच पास 'प्रभाकर' हो।

मैं खत से पूछा करता हूँ –
व और लिखा करती है क्या ?
ऐ स्याही ! बता, कलमवाली
हर रोज किया करती हैं क्या ?

क्या सचमुच उनको कविता से
है प्रेम, सिनेमा जाती हैं ?
क्या सचमुच ही स्टेशन से
'माया' हर माह मँगाती है ?

क्या सचमुच ही वे ओठ
रँगा करती है, भोंह बनाती हैं ?
क्या सचमुच ही जब हँसती हैं
आँखें छोटी होजाती हैं ?

ऐ नरम लिफाफे बतलादे ,
वे नरम-नरम दिल वाली है ?
या उनका रूखा है स्वभाव
टेढ़ी है, हटरवाली हैं ?

ओ हंटरवाली ! अरे, अरे !
मैं कौन, कहाँ ? क्या सोच रहा ?
यह कौन खड़ा पीछे कुर्सी के
धीमे-धीमे नोच रहा ?

ओं, तुम हो "जग्गो की जीजी" ,
हां, आओ, ऐजी ? ये क्या है ?
ये चिट्ठी ? अरे नहीं छोड़ो ,
यह तो दफ्तर का पुर्जा है ।

हाँ, पुर्जा है, लिक्खा है – जल्दी
आओ, काम जरूरी है।
मैं जाता हूँ, क्या करूँ,
नौकरी है, बेहद मजबूरी है।

"ये दफ्तर के पुर्जे कब से
इस घर मे आते-जाते हैं?
मैं देख रही हूँ रग-ढंग
कुछ बदले-से दिखलाते हैं!

लाओ, देखूं आखिर क्या है!"
ऐ नहीं, तुम नहीं समझोगी।
लाओ सम्हालकर रख छोड़ूं
वरना तुम कहीं फेंक दोगी।

"जी नहीं, इसे मैं भी सम्हालकर
रक्खूंगी, घबड़ाओ मत।"
लो तुम भी क्या सर पड़ी
सिर्फ पुर्जा है, शका लाओ मत!

"मैं पुर्जे को, पुर्जेवाली को
कच्चा ही खा जाऊंगी।
मैं नहीं उठाई आई हूँ,
ब्याही हूँ मजा चखाऊंगी।

ये कौन कलमुही डाइन है
जो यों तुमको भरमाती है।
भगवान् घोर कलियुग आया
धरती न हाय फट जाती है।

ओ मय्यारी, ओ बाबा रे,
अच्छे घर में तुमने ब्याही।
मैं इधर गिरूं तो कूआं है,
औ' इधर गिरूं तो है खाई!

\+ + +

ओ खतवाली, अब तुम्ही कहो,
ये चिट्ठी इन्हे दिखादूं क्या?
या जो कुछ अब तक सोचा है,
वह फिर से इन्हे सुनादूं क्या?

व्यास

हास्यावली

कोऊ कोटिक सग्रहौ, कोऊ लाख पचीस।
राम, हमारी तो बनी, रहै चार-सौ-बीस॥

जाको राखै साइया, मारि सकै ना कोय।
ज्यौ-ज्यौ चर्चिल कोसिए, त्यौ-त्यौ मोटो होय॥

जिन्ना-पाकिस्तान को ऐसैं मिलिगौ मेल।
दियौ छँछूदर ने मनौ, सीस चमेली तेल॥

राम झरोखा बैठिकें, सबको मुजरा लेइ।
सिकल देखिकैं ऊजरी, ऊनी कपरा देइ॥

जप-तप-तीरथ मत करो, बरतौ स्वेच्छाचार।
नरकहु मे अब खुलि गए, नामी चोर बजार॥

कृष्ण चले ब्रज भूमि कौ, राधा पकरे बांहं।
कोइला यहां ते लै चलो, वहाँ मिलैंगे नायं॥

काल मरै सो आज मर, आज मरै सो अब।
ईंधन पै रासन भयो, फेरि मरैगो कब्ब?

आवत ही हरखै नहीं, नयनन नही सनेह।
हम बोतल लैके खड़े, तेल न बनिया देइ॥

तुलसी या संसार में कर लीजै दो काम।
भरती हूजै फौज मे, वार फन्ड मे दाम॥

कबिरा नौबत आपनी, दिन दस लेहु बजाय।
जी० एच० क्यू० की नौकरी, ज्यादा टिकनी नायँ॥

नया रोजगार

ठेकेदारी मे बढ़े चाम, दाम और नाम।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम॥

राय बहादुर ना भये, देख्यो पेपर छान ।
कबहुक दीन दयाल के भनक परैगी कान ।।

पड़े रहै दरबार मे, धका धनी के खाई ।
अबकै 'सर' है जाइँगे, पैर रहैंगे नाइं ।।

ससुर खड़े, पत्नी खड़ी, काके लागूं पाय ।
बलिहारी इन ससुर की पत्नी दई बिवाहि ।

तनखा थोडी मिलत है, पत्रकार चिल्लाहि ।
रहिमन करुए मुखन कौ चहियत यही सजाहि ।

अरजी दै दै जग मुआ, नौकर हुआ न कोय ।
पढ़ै खुसामद को सबक, नौकर मालिक होय ।।

रूंठी लीग मनै नहीं, लाख मनावौ कोय ।
रहिमान बिगरे दूध के मथे न माखन होय ।।

। या गो अ गा र

रहिमन जिन्ना मिया ते, तजौ बैर और प्रीत ।
चाटे-काटे स्वान के, दुहे भाति विपरीत ।।

रहिमन लाख भली करौ, जिन्ना जिद् न जाइ ।
राग सुनत, पय पियतहू, साप सहजि घर खाइ ॥

रहिमन जिन्ना चाक ते, मांगौ दिया न देइ ।
छेदहि डंडा डारि कैं चहै नॉद ले लेइ ॥

जिन्ना मे ना लगि रही, जिहू भई है जिद् ।
'जिन' को मतलब भूत है, तीनो बात निषिद्ध ॥

आप न काहू काम के डार, पात, फल-मूर ।
औरन को रोकत फिरै, जिन्ना वृक्ष-बँबूर ॥

जब लगि ही जीबो भलो, फलै चार-सौ-बीस ।
बिना चार-सौ बीस के, जीवन तेरह-तीस ।

वार फण्ड के कारनै, सब धन डारो खोइ ।
मूरख जानै खो गयौ, लाख-चौगुनौ होइ ॥

एक घड़ी, आधी घड़ी, आधिहु मे पुनि आध । न या रो ज गा र
संगत साहूकार की हरै कोटि अपराध ॥

अर्थ, न धर्म, न काम रुचि, पद न चहौ निर्वान।
केवल रायबहादुरी, दीजै दया निधान॥

ज्वार-मका की रोटिया, घासलेट कौ घी।
रूखी-सूखी खाइ कैं, ठंडा पानी पी।

कौन करै अब नौकरी, कौन करै व्यापार।
राम सलामत जो रखै, जुग-जुग चोर बजार॥

सांकल घर की लग गई, रात भई हौ देर।
रहिमन चुप है बैठिए, देख दिनन के फेर।
सियावर रामचन्द्र की जै।

आदत से मजबूर

सूर सूर, तुलसी ससी, उडगन केशव दास,
अन्त-निराला बल्ब है, लालटेन है व्यास।

लालटेन है व्यास कि जिसमे तेल नही है,
बत्ती बिगडी हुई जलाना खेल नही है,
चिमनी फुटी हुई कि जिसका मेल नहीं है,
माडल उन्तालीस कि जिसकी सेल नही है।

शब्द अर्थ और व्यंग से यद्यपि कोसो दूर है।
लेकिन इसको क्या करूं आदत से मजबूर है।

आदत से मजबूर जिस तरह मिस्टर जिन्ना,
बैठे शिमला शिखर बजाते ता-धा-धिन्ना,
सबकी सीधी चाल, मगर वे ऐंचक-तिन्ना,
सबकी सीधी बात, मगर वे छिन्ना-भिन्ना,

यद्यपि पाकिस्तान से वे भी कोसो दूर हैं।
लेकिन इसको क्या करे, आदत से मजबूर हैं।

च ★ ★ ला ★ ★ जा

गरीबों के घर का तो मालिक खुदा है,
तू अपना ही रुतबा बढ़ाता चला जा।
बगावत से रह दूर जा रेडियो पर,
तू जगी तराने सुनाता चला जा।

गरीबों से क्या पाएगा तू तरक्की,
अमीरो से दिल को मिलाता चला जा।
तू बच्चो के उनसे मुहब्बत किये जा,
हरम की हुकूमत उठाता चला जा।

ये उर्दू न हिन्दी कभी बन सकेंगी,
तू अपनी कमाई कमाता चला जा।

निराशा से जी छोड़ बैठे हैं अफसर
उन्हे राह अपनी दिखाता चला जा।
ये मुमकिन नहीं तू हटे हार जाए
खुशामद के बस गुल खिलाता चला जा।

अगर तुझको साहब कभी गालियाँ दे,
उन्हे झेलता मुस्कुराता चला जा।
अगर काम बनता है सर को झुकाए,
तो सौ बार सर को झुकाता चला जा।

अगर हेड बनना है, दफ्तर मे तुझको,
शिकायत किये जा, सुभाता चला जा।
जहाँ भी अँधेरा नजर आये तुझको
तू मौके के दीये जलाता चला जा।

तू लीडर बनेगा कहा मान मेरा,
बयानो को शाया कराता चला जा।
गुलामी से मत डर, मिनिस्टर बनेगा
कि बस हाँ-मे-हाँ तू मिलाता चला जा।

न डर देशभक्तों से बकते हैं ये तो,
कदम अपना आगे बढ़ाता चला जा।
ये अखबार वाले अगर तुझको छेड़ें,
तो पर्वाह न कर लड़खड़ाता चला जा।

———

मुझे जुकाम हुआ है

संगिनि मुझे जुकाम हुआ है !

कहता था कि रायता मुझको
रुचता नही, ठड करता है ;
पर तुम मानी नही, दही मे
पानी घोल पिला ही डाला ;

अब चलो, यह छी ! आं ·· छी-आं ·· छी
सब कुछ हाय हराम हुआ है !
सगिनि मुझे जुकाम हुआ है !

सर मे मेरे धम-धम
बम के गोले मानो बरस रहे हैं।
हाथ-पैर मे हडकन
मानो टैंक कुदकते हैं नस-पर।
आज नाक मे ब्रिटिश फौज का
सचमुच सदर मुकाम हुआ है।
सगिनि मुझे जुकाम हुआ है!

नाक का मतलब तोप,
तोप का मतलब छीके गरज रही है,
छीक का मतलब नही,
नही का मतलब युद्ध चलेगा लम्बा :
अरे चाशनी शीघ्र बना दो
अभी नही आराम हुआ है।
सगिनि मुझे जुकाम हुआ है!

———

इतना ही क्या

★

★

★

मुझ को

★

★

कम है

इतना ही क्या मुझको कम है !

एक पत्नी है, दो बच्चे हैं,
पुस्तक भर-कर अलमारी है।
दुनिया लेखक—लेखक कहती
करती सराहना प्यारी है।

क्या हुआ समालोचक मेरी
रचना की करते कद्र नहीं,
फिर भी मैं लिखता रहता हूँ,
छपने का क्रम भी जारी है।

रचनाए नहीं लौटती हैं
परिश्रम की फिर क्या गम है!
इतना ही क्या मुझको कम है !

तुम कहते हो कि प्रकाशक
मेरा खून चूसने मे तत्पर,
मैं कहता हूँ यह गलत
उन्हे अफसोस हमारी किस्मत पर,

वे मुझे देख होते प्रसन्न
मिलते ही पान खिलाते हैं।
वापस आता हूँ दरवाजे तक
आकर खुद पहुंचाते हैं।

रायल्टी भले देर से दे
व्यवहार मगर सुन्दरतम है।
इतना हीक्या मुझको कम है!

लेखन कोई व्यवसाय नही,
जिसमे कि लाभ देखा जाए।
लेखक कोई मजदूर नही,
जो काम करे रोजी पाए!

(अरे) लेखन तो उग्र तपस्या है,
हिन्दी का लेखक वैरागी!
बिन मांगे ही देता जाए!
कुछ भी न कहे सहता जाए!

मैं भी अपना साहस बटोर
सहता जब तक मुझको दम है।
इतना ही क्या मुझको कम है!

हिटलर मारा गया हो गई

हा————————र

अर्मनवाला डाल गया हथियार ,
हिटलर मारा गया, हो गई हार ,
योरुप के संगीन मोर्चे पर जीती सरकार ।

हाकर के यूं चिल्लाते ही ,
लाला का आसन डोल गया ।
लल्ली कांपी, लल्ला रोया ,
लालाइन का दिल खोल गया ।

सोचने लगे—क्या सचमुच ही ,
सोना पचास हो जाएगा ?
कपड़े की गांठे छुपा रखी ,
इनका विनास हो जाएगा ?

अब तीन रुपे की चीज,
तीस मे हाय नही बिक पाएगी ?
अब क्या बजार पर शिव-शकर !
पहली-सी सुस्ती छाएगी ?

ऐ महादेव ! भोले बाबा !
औघडदानी ! ऐसा वर दो।
सोने का साप चढाऊंगा,
हिटलर को फिर जिन्दा कर दो !

ऐ मजिस्ट्रेट महाराज, भले ही
वारफण्ड तुम ले जाओ।
सर्टीफिकेट के भी कागज
जो नही बिके हो दे जाओ।

पर माई-बाप कृपा करके
फौजो को हुकुम सुना डालो।
तुम मरे हुओ को ही मारो
जिन्दो के खून सुखा डालो।

सोने को रोके रहो
महल सोने का मुझे बना दो।
चांदी को कागज ही कर दो
पर मुझ पर आँच न आने दो।

लो, मलमल का यह एक थान,
कल रेशम का भिजवाऊंगा।
बनिया का बेटा हूँ हुजूर,
कह दूंगा उसे निबाहूँगा।

२

जर्मनवाला डाल गया हथियार,
हिटलर मारा गया, होगई हार,
योरुप के संगीन मोर्चे पर जीती सरकार।

'हाकर' के यू चिल्लाते ही
बाबू सोया था जाग गया।
दिन मे ही तारे दीख गये,
आलस खुमार सब भाग गया।

सोचने लगा—क्या सचमुच ही
क्वाटर मेरा छिन जाएगा?
क्या सचमुच ही सप्लाई का
यह दफ्तर मारा जाएगा?

क्या सचमुच ही अब बेकारी
फिर से मुँह फाड़े आएगी?
जैसे-तैसे जो शान्त हुई
वह बीवी फिर सिर खाएगी?

हे बजरंगी ! हे रणरंगी !
हनुमान, गये किस लका मे ?
जल्दी आकर के पुल बाँधो,
ये भक्त पड़ा है शका मे !

तुलसी के चिन्तन पर तुमने
लाखो बन्दर उपजाये थे।
सुनता हूँ शाह अकबर के
छक्के तुमने छुड़वाए थे।

सो महावीर ! अंजनी-पूत !
वैसा ही कौतुक दिखलाओ।
पश्चिम के विकट मोर्चे पर
तुम कुमुक वानरी भिजवाओ।

कोई हारे, कोई जीते
इसकी विशेष परवाह नहीं।
वेतन मे और तरक्की हो
इसकी भी अब परवाह नही।

पर रामदूत ! ऐसा वर दो,
लैजर-फायल ये बनी रहें।
मैं रहूँ, रहे नौकरी और
हाकिम की नजरें घनी रहें।

३

जर्मनवाला डाल गया हथियार,
हिटलर मारा गया, होगई हार,
योरुप के संगीन मोर्चे पर जीती सरकार।

सम्पादक की पत्नी बोली,
"लो, झगड़ा मिटा लड़ाई का।
अब सांस खुले में हम लेंगे,
युग बीत गया मँहगाई का।

मैं अब मानूंगी नही, जरूरी
चीजे कुछ बनवाऊंगी।
सोना पचास होते ही मैं
बाजार दरीबे जाऊंगी।

पर बात लड़ाई की सुनकर
एडीटर का मुँह सूख गया।
सोने की चर्चा चलते ही
बेचारे का दिल दूख गया।

यूं सोचा खादीधारी ने,
यूं सोचा व्योमविहारी ने,
यूं सोचा तबीयत खारी ने,
यूं सोचा ... ने।

क्या सचमुच ही मँहगाई का
यह भत्ता मारा जाएगा ?
जो बोनस दुगना-तिगुना है
वह हाय उतारा जाएगा !

जैसे-तैसे ये सौ-पचास
जो जमा हुए चुक जाएगे।
फिर इन्द्रिय-दमन शुरू होगा
सत्याग्रह के दिन आएगे ?

ऐ रूटर की मशीन उगलो
तुम ही कुछ हाल लड़ाई के।
ऐ मोलोटोव तुम्ही हो अब
सचमुच मे केन्द्र बड़ाई के।

ऐ चेंबिल देखे दृष्टि तुम्हारी
कितनी पैनी जाती है।
ए चर्चिल देखे चाल तुम्हारी
अब क्या-क्या रग लाती है ?

तू
राम भजन
कर
प्रा——————नी

तू राम भजन कर प्रानी !
क्या लट्ठा-मलमल पहनेगा, धोती बाँध जनानी ।

पहन जनानी धोती बन्दे ,
कुरता बना फाड़ कर नम्दे ,
उनसे कहदो टाट लपेटें, माया आनी-जानी !
तू राम भजन कर प्रानी !

मैदा-सूजी मत खा भाई ,
शक्कर, शर्बत त्याग मिठाई ,
बना सौंठ का पानी, जिससे जाती रहे गिरानी !
त राम भजन कर प्रानी !

मत मिट्टी का तेल जला रे,
आँखें फूट जाएंगी प्यारे,
धीरे-धीरे स्वयं रात में सूझ उठेगा ज्ञानी!
तू राम भजन कर प्रानी!

चिन्ता मतकर तू अकाल की,
धमकी भी क्या तुझे काल की,
वचन शास्त्रों का प्रमाण कर दो दिन की जिंदगानी!
तू राम भजन कर प्रानी!